Research Scholar- Pooja Prajapati

Supervisor- Prof. Indu Virendra

Department- Hindi

Title- Valmiki Ramayan Aur Ramcharitmanas mein Abhivyakt pitrisatta ka Adhyayan

संक्षिप्त शोध सार

संस्कृत और अवधी भाषा में रचित क्रमशः रामायण, रामचरितमानस कृतियों का पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण से बहुचर्चित एवं प्रचलित प्रसंगों, पंक्तियों के आधार पर ही नहीं अपितु, सूक्ष्मता से समस्त रामकथा का प्रस्तुत शोध विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। धर्म और पितृसत्ता एक-दूसरे के पूरक हैं, दोनों परस्पर वर्चस्व को कायम रखने में सहयोग करते हैं। सरल शब्दों में कहे तो धर्म और पितृसत्ता एक-दूसरे की सत्ता कायम रखने में सहयोग देते हैं। पितृसत्ता से जुड़ी सारी नियमावली, रीति-रिवाज धर्म द्वारा ही सीखे और सिखाये जाते हैं। धर्म और स्त्री परस्पर घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं। स्त्री को कब, कैसे, कहाँ क्या करना चाहिए यह सब धर्म द्वारा उसे सिखाया जाता है। धर्म का संबंध एवं उसकी समस्त शिक्षाएं तो मात्र स्त्रियों के लिए ही बनायी गयी हैं। धर्म की सीख परिवार एवं धर्म-ग्रंथों द्वारा स्त्रियों को दी जाती है।

परिवार, रिश्ते-नाते, जाति, वर्ग, विवाह, संस्कृति, धर्म, राजनीति एवं अर्थ इत्यादि समाज के महत्वपूर्ण घटक हैं जो उससे प्रभावित होते भी हैं और उसे करते भी हैं। समाज-निर्माण की भूमिका अदा करने वाले यही उपरोक्त तत्व एवं संस्थाएं ही पितृसत्तात्मक मानसिकता की संवाहक बनकर सम्पूर्ण समाज को प्रभावित करते हैं। राजनीति और अर्थ क्षेत्र में सर्वाधिक पुरुषों का ही वर्चस्व है, स्त्रियों का प्रवेश यहाँ प्रायः वर्जित है। बदलते समय के साथ स्त्री

02/08/22

Pooja Prajapati

समाज ने अपनी एक पहचान कायम की है परिणामस्वरूप सदा से वर्जित राजनीति और अर्थ के क्षेत्रों में स्त्री का पर्दापण होने लगा।

आदर्श एक परिस्थिति एवं काल विशेष हेतु भले ही अनुकूल हों लेकिन आवश्यक नहीं कि वह सभी परिस्थितियों और कालखंड के लिए भी अनुकूल हो। आदर्शों को काल एवं परिस्थिति के अनुसार कुछ परिवर्तन भी करना चाहिए जिससे वह जनजीवन को बिना बाधित किए संचालित कर सकें। राष्ट्रहित को मध्य-नजर रखते हुए बने संविधान में यदि बदलाव किये जा सकते हैं तो हमारे सदियों से चले आ रहे आदर्शों में परिवर्तन संभव हैं। अयोध्या की राजनीति में आया परिवर्तन बहुपत्नी विवाह से उत्पन्न उत्तराधिकारी के प्रश्न पर मंडराते संकट के कारण हुआ था। राजगद्दी के उत्तराधिकारी के चयन की इस एक घटना ने न सिर्फ अयोध्या अपितु, लंका, किष्किंधा की समस्त राजनीति को भी प्रभावित किया।

रामकाव्य की कुछ प्रमुख एवं गौण सीता, मंदोदरी, कैकेयी, उर्मिला, कौशल्या, अनुसूया, अहल्या, शूर्पणखा, मांडवी और सुमित्रा इत्यादि स्त्रियों ने किसी-न-किसी रूप में पितृसत्तात्मक मानसिकता के अन्याय का शिकार होना ही पड़ा है। इनमें से किसी एक-दो स्त्रियों ने पितृसत्ता का प्रखर अथवा सांकेतिक विरोध दर्ज किया है, जिसे आदर्शों को स्थापित करने के लिए बुरा-भला कहकर छिपा दिया गया है।

रामायण और रामचरितमानस दो भिन्न समयकाल, परिस्थितियों, भाषाओं और मानसिकता से लिखी गयी है। रामायण में वाल्मीकि ने राजा राम के जीवन को चित्रित किया है तो कवि तुलसीदास ने परब्रह्म परमात्मा श्रद्धेय राम को शब्दबद्ध किया है। साहित्य-क्षेत्र में रामचरितमानस को साहित्यिक कृति से अधिक धार्मिक कृति का दर्जा दिया जाता है। प्रस्तुत शोध ग्रंथ में भक्ति भावना से परे केवल साहित्यिक दृष्टि से इन दोनों कृतियों का पितृसत्तात्मक विश्लेषण है। साहित्यिक कृतियों के पात्रों के अनुसार ही इन दोनों रचनाओं के चरित्रों का भी चारित्रिक मूल्यांकन किया गया है।

JAMIA MILLIA ISLAMIA जामिया मिल्लिया इस्लामिया
(A Central University by an Act of Parliament)
Maulana Mohammed Ali Jauhar Marg, New Delhi-110025

Office of the Controller of Examinations دفتر کنٹرولر امتحانات
Tel. : +91-11-26981717 Extn. : Sr. PA to CoE-1401, ACE-1450, DR : 1421, AR : 1410
Direct-Controller : +91-11-26329167 : ACE : 26329165; DR : 26840961; AR : 26847078

File No. COE/Ph.D./HIN/131/2022 **25.01.2022**

TO WHOM IT MAY CONCERN

This is to certify that **Ms POOJA PRAJAPATI**, Ph.D. Scholar in the Department of Hindi, Faculty of Humanities and Languages, Jamia Millia Islamia, has submitted the thesis entitled, **"VALMIKI RAMAYAN AUR RAMCHARITMANAS MEIN ABHIVYAKT PITRISATTA KA ADHYAYAN ."** under the guidance of **PROF. INDU VIRENDRA,** Department of Hindi, Jamia Millia Islamia, on 25-01-2022.

28/1/22
Asstt. Registrar (Exams)

Mehar 27/01/2022
Verified by:
(Section Officer)

Checked by:

Pooja Prajapati